शबद

भाग – १

हमारे मन में पहले **भावना** उत्पन्न होती है । बुद्धि इसकी छानबीन करके **'ख्याल'** का रूप देती है । फिर जब हम इस ख्याल को प्रकट करना चाहते हैं, तब इसे अपनी **बोली** तथा शब्दों का प्रयोग करके, जिह्वा द्वारा बोल कर या लिख कर प्रकट करते हैं । इसका तात्पर्य, यह हुआ, कि हमारे **मनोभाव या ख्याल ही मूल कारण हैं ।** हमारी बोली अथवा 'शब्द' तथा 'अक्षर' इन **ख्यालों को प्रकट करने के साधन-रूप हैं ।** यह सारी क्रिया **सगुण दुनिया की क्रिया है** अथवा **त्रि-गुणों का 'खेल' है ।**

इससे **आगे आत्मिक दुनिया का 'खेल' भिन्न है ।**

परमात्मा का स्वरूप **'आत्म-प्रकाश'** है, जो **'शब्द'** या **'नाम'** द्वारा **प्रकाशित तथा प्रवृत्त होता है ।**

माया के घोर अंधकार में, जब कभी हमारे उन्मन पर इस आत्मिक प्रकाश की **चमक पड़ती है** — तब इसे **अनुभव कहा जाता है ।**

गुरबाणी अनुसार, **'आत्मिक प्रकाश' की झलकों को 'अनुभव' करना ही 'शबद' का —**

बूझना

सीझना

चीन्हना

पहचानना

विचार करना

पालन करना

कहा गया है, न कि बुद्धि द्वारा समझना ।

चीनत चीतु निरंजन लाइआ ।।
कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ।। (पृ ३२८)

उनमनि मनूआ सुंनि समाना दुबिधा दुरमति भागी ।।
कहु कबीर अनभउ इकु देखिआ राम नामि लिव लागी ।। (पृ. ३३३)

जीवत पावहु मोख दुआर ।।
अनभउ सबदु ततु निजु सार ।। (पृ ३४३)

पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ।।
लोहा कंचुन हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ।। (पृ ९७३)

बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था ।।
अनभउ अचरज रूपु प्रभ पेखिआ
मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ।। (पृ १००२)

गुर उपदेसु अवेसु करि अनभउ पद पाई । (वा़ भा़ गु ९/५)

सबद सुरति लिवलीण होइ अनभउ अघड़ घड़ाए गहणा ।
(वा़ भा़ गु १८/२२)

गुरबाणी का उच्चारण आत्म-प्रकाश के 'अनुभव' में से हुआ है । इस लिए हमारी **सीमित बुद्धि की छानबीन, समझ तथा पकड़ से दूर है ।** इसी कारण हम गुरबाणी के गहरे, गुप्त आध्यात्मिक अर्थों, भेदों तथा भावों से अनजान हैं तथा गुरबाणी की **गहराईयों के गुप्त भावों तथा भेदों का रस अनुभव करने से असमर्थ हैं ।** हम अपनी-अपनी बुद्धि द्वारा गुरबाणी के शाब्दिक तथा भाव-अर्थों का विचार कर के ही **सन्तुष्ट हुए रहते हैं ।**

गुरबाणी में **'शबद'** तथा **'नाम'** शब्दों का उल्लेख अनेक बार आया है तथा अन्य शब्दों की भाँति **'शबद'** शब्द का भी हम **अल्प बुद्धि** द्वारा ही अर्थ करते तथा सुनते हैं । जिस कारण जिज्ञासुओं में **'शबद'** शब्द के विष्य में **भ्रम भ्रांतियां पड़ी हुई हैं ।** गुरबाणी में इस की यूँ **पुष्टि** की गयी है —

सबदु न चीनै कथनी बदनी करे बिरिवआ माहि समानु ।। (पृ ३९)

सबदु सूझै ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ ।। (पृ ११३)

गुर का सबदु को विरला बूझे ।।
आपु मारे ता त्रिभवणु सूझै ।। (पृ १२०)

त्रै गुण पड़हि हरि ततु न जाणहि ।।
मूलहु भुले गुर सबदु न पछाणहि ।। (पृ१२८)

माइआधारी अति अंना बोला ।।
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला ।। (पृ ३१३)

उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ।। (पृ३८०)

एकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी आवहिगा ।। (पृ ४३४)

सबदु न जाणहि से अंने बोले से कितु आए संसारा ।। (पृ ६०१)

मूरखु सबदु न चीनई सूझ बूझ नह काइ ।। (पृ९३८)

जब लगु सबद भेदु नही आइआ तब लगु कालु संताए ।। (पृ११२६)

पल पंकज महि नामु छडाए जे गुर सबदु सिञापै ।। (पृ १२७५)

इस लेख में गुरबाणी के **'अनुभवी प्रकाश'** में 'शबद' शब्द पर विचार करने का प्रयास किया जाता है —

गुरबाणी में **'शबद'** शब्द के संग कई **विशेषण** लगाये हैं, जैसे कि —

गुर शबद
सच शबद
अनहद शबद
एक शबद
तत शबद
पूरा शबद
खेवट शबद
निरभउ शबद
साहिब शबद
अलख शबद
करारा शबद
लंगर शबद
रतन शबद
भतार शबद
शीतल शबद

अपार शबद
दाता शबद
बोहिथ शबद
नीसाण शबद
अंकस शबद
अबिनासी शबद
मीठा शबद
महारस शबद
अउरवध शबद आदि ।

'शबद' शब्द तथा उनके **विशेषणों** के अनुभवी भाव अर्थात **को** —

सुनने
विचार करने
पहचानने
बूझने
सीझने
पालन करने
आनन्दित होने

के लिए **'अनुभवी सूझ' की आवश्यकता है ।**

परन्तु साधारणतया, हम उस **'तत् शबद' के शाब्दिक स्वरूप को ही अपनी** अल्पज्ञ बुद्धि द्वारा —

सुनना
समझना
अर्थ करना
विचार करना

समझते हैं ।

परन्तु वास्तव में 'तत् शबद' में कोई गुप्त भेद है, जिसे केवल 'अनुभव' द्वारा ही —

जान
बूझा

चीन्हा
सीझा
पहचाना
विचार किया
पालन किया
रसपान किया
मनन किया
आनन्दित हुआ

जा सकता है।

जब तक हमारी अन्तर-आत्मा में अनुभव प्रकाश नहीं होता, तब तक हमने सगुण दुनिया में विचरण करते हुए **'गुर शब्द'** के शाब्दिक-स्वरूप गुरबाणी से नाता जोड़ना है। गुरबाणी का पाठ, कीर्तन, विचार तथा अर्थ समझने तथा समझाने की केवल आवश्यकता ही नहीं, अपितु यह **आध्यात्मिक मार्ग के लिए अनिवार्य है।**

सत्संग तथा सिमरन ही अनुभवी देश या आत्मिक मंडल की ओर ले जाने का साधन है।

हमें इन दोनों — 'मानसिक' तथा 'आत्मिक' मंडलों की क्रिया का सही ज्ञान होना आवश्यक है। इस **'ज्ञान'** अनुसार ही हमें अपना **'आत्मिक जीवन' ढालना है।**

सिक्ख जगत में बहुत से लोग मानसिक तथा शारीरिक साधना को ही धार्मिक 'मंज़िल' समझ कर सन्तुष्ट हैं।

वास्तव में शारीरिक तथा मानसिक साधना —

यत्न हैं	-	परिणाम नहीं !
साधन हैं	-	पूर्णता नहीं !
सीढीयाँ हैं	-	शिखर नहीं !
क्लासें हैं	-	डिग्री नहीं !
ज्ञान है	-	प्राप्ति नहीं !
यात्रा है	-	मंजिल नहीं !

फूल है - महक नहीं !
फल है - रस नहीं !

हमारी **'मंजिल'** अनुभवी-प्रकाश द्वारा आदि 'दिव्य मंडल' में पहुँच कर **हरि में विलीन होना है ।**

गुरबाणी में **'शबद'** के अनेक पक्ष दर्शाये गये हैं, जैसे —

'शबद' —
गुरू है
प्रकाश है
रवि रहिआ परिपूर्ण है
निर्मल है
नाम है
अमृत है
आत्म रस है
आत्म रंग है
धुर की बाणी है
ज्योति है
तत् है
पूर्ण है
निरभउ है
अविनाशी है
निर्मल नाद है
दाता है
सॅची गुरमति है
प्रेम पदार्थ है
करारा है
हीरा रत्न है
लंगर है
नीसाण है
आत्मा है

खेवट है
बोहिथ है
बखिशश है
सदा अंग संग है
अन्तर ध्यान है
अखुट धन है
भक्ति भंडार है
चरण कमल है।

सृष्टि की रचना करने से पहले **'निरंकार'** युग-युगान्तरों से केवल अपने आप में ही विस्मादमयी शून्य समाधि स्वरूप में विलीन रहा। दृष्ट तथा अदृष्ट संसार कुछ भी नहीं था। 'निरंकार' के इस आश्चर्यजनक तथा अद्भुत स्वरूप का गुरबाणी में यूँ वर्णन किया गया है —

आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले सुंन निरंतरि वासु लीआ ॥ (पृ. ९४०)

अरबद नरबद धुंधूकारा ॥
धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥
ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥ (पृ. १०३५)

केतड़िआ दिन गुपतु कहाइआ ॥
केतड़िआ दिन सुंनि समाइआ ॥
केतड़िआ दिन धुंधूकारा आपे करता परगटड़ा ॥ (पृ. १०८१)

मन, चित, बुद्धि, शब्द, रूप-रंग, वेष-भूषा तथा आहत-नाद से परे 'तत-रूप शबद' पहले सृजनहार निरंकार की 'शून्य-समाधि' की अवस्था में बसता था।

रूपु न रेखिआ जाति न होती
तउ अकुलीणि रहतउ सबदु सु सारु ॥ (पृ. ९४५)

'सिद्ध-गोष्ठी' में गुरू नानक साहिब के **'शबद गुरू मति'** के विषय में सिद्धों ने अनेक प्रश्न किये, जिसका केवल संक्षिप्त वर्णन यहाँ किया जाता है—

1. इस 'मति' का मूल क्या है ?
2. यह 'मत' कब प्रारम्भ हुआ ?
3. तुम्हारा 'गुरू' कौन है ?
4. शिष्य किस प्रकार बनते हैं ?

कवण मूलु कवण मति वेला ।।
तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ।। (पृ ९४२)

इन प्रश्नों का उत्तर गुरू नानक साहिब ने यूँ दिया —

1. इस 'मत' का नाम 'सतिगुर मत' है, भाव इस 'मत' का मूल या संचालक अकाल पुरुष स्वयं ही है ।

2. जब से वायु बनी है या जब से सृष्टि बनी है, तभी से यह मत चला आ रहा है । इसलिए गुरू नानक साहिब का **'शबद-गुरू मति'** केवल 500 वर्ष पुराना नहीं, क्योकि यह 'शबद', 'बाणी' के रूप में गुरू नानक साहिब तथा अन्य अनेक अवतारों, सन्तों, भक्तों, महापुरुषों को प्रत्येक युग में अनुभव होता रहा है । गुरू नानक साहिब ने दस अवतार तथा अब गुरू ग्रन्थ साहिब के रूप में इस **अलोप हो रहे 'शबद गुरू मति' को पुनः सजीव करके प्रचलित किया तथा इसकी अपार स्तुति की एवम महत्ता बताई ।**

साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ।।
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ।। (पृ. १९)

पउण पाणी बैसंतरो चउथी धरती संगि मिलाई ।
पंचमि विचि आकास करि
करता छटमु अदिसटु समाई । (वा. भा. गु. १/२)

3. हमारा गुरू 'शबद' है ।

4. 'शबद' गुरू में **सुरति जोड़ना** या शबद के **अनहद नाद में 'सुर' होना** ही 'चेला बनना' है ।

पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ।।
सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ।। (पृ ९४३)

उपरोक्त दर्शाये **'शबद'** से समस्त सृष्टि की रचना हुई है, शबद में ही विलीन हो जाती है तथा फिर दुबारा 'शबद' में से उत्पन्न होती है —

उतपति परलउ सबदे होवै ।।
सबदे ही फिरि ओपति होवै ।। (पृ ११७)

सिद्धों का अगला प्रश्न था कि इस **'शबद' का निवास कहाँ है ?**

तब गुरू नानक साहिब ने उत्तर दिया कि 'शबद' हमारी **गहन** अन्तर-आत्मा में बसता है तथा बाहर सृष्टि में भी सर्वत्र ओत-प्रोत प्रवृत्त है ।

जेता कीता तेता नाउ ।।
विणु नावै नाही को थाउ ।। (पृ ४)
जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ।। (पृ ६९५)
सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै त्रिभवण जोति सु सबदि लहै ।।
(पृ ९४५)
सु सबद कउ निरंतरि वासु अलखं जह देखा तह सोई ।। (पृ ९४४)

उपरोक्त गुरबाणी की पंक्तियों से यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है, कि परमात्मा — 'शबद', 'नाम' अथवा 'ज्योति' के स्वरूप द्वारा **हमारे अन्दर तथा समस्त सृष्टि में, रवि-रहिआ-परिपूर्ण है ।**

वैज्ञानिकों ने पदार्थ को बारीक से बारीक तोड़कर यह सिद्ध किया है कि यह निर्जीव पदार्थ (dead matter), अदृष्य अति सूक्ष्म —

1. प्रोटोन्स (protons),
2. न्यूट्रोन्स (neutrons)
3. इलैक्ट्रोन्स (electrons), आदि

बारीक सूक्ष्म कणों (minute nuclear particles) का बना हुआ है। इन में से प्रोटोन्स तथा न्यूट्रोन्स परमाणु (atom) के केन्द्र (nucleus) में स्थिर रहते हैं, परन्तु इलैक्ट्रोन्स प्रकाश की गति से, सदा ही केन्द्र के चारों ओर चक्कर (vibrate or oscillate) लगातेरहतेहैं। इन इलैक्ट्रोन्स की हरकत द्वारा ही दुनिया के समस्त पदार्थ तथा बिजली (electric-current) अस्तित्व में आती है। अर्थात इलैक्ट्रोन्स की सूक्ष्म तथा अदृष्य हरकत (vibrations) ही, पदार्थ तथा बिजली की स्थूल तथा दृश्यमान शक्ति (power) का मूल है।

ठीक इसी प्रकार धरती की प्रत्येक वस्तु, 'अदृष्य आकर्षण' या 'गुरुत्व आकर्षण (gravitational-pull) के अधीन है, प्रत्येक वस्तु के परमाणु इस आकर्षण के नियमों का पालन करते हैं। ऐसा 'आकर्षण' सभी परमाणुओं में केवल धरती पर ही नहीं, बल्कि सारे विश्व में व्यापक तथा प्रवृत्त है।

'पदार्थिक आकर्षण', चुम्बकीय आकर्षण (magnetic pull) की भाँति, एक अदृष्य नियम अनुसार काम करता है। इस प्रकार के प्राकृतिक नियम, अचेतन होने के कारण, निरंकारी नियमों से पृथक किये जा सकते हैं।

उपरोक्त दोनों उदाहरणों से सिद्ध होता है कि निर्जीव पदार्थ में भी 'शक्ति' काम कर रही है। परन्तु यह 'शक्ति' तथा इसके नियम 'चेतन' नहीं, क्योंकि यह **बुद्धि**

(intelligence) **तथा भावनाओं** (emotion) **से वंचित है।** इन बाहरी दृश्यमान सांसारिक 'तत्वों (elements) तथा इनके अचेत नियमों का चालक (controller), **एक अन्य 'सत् चित्-आनन्द' स्वरूप 'परम-तत्'** (primal element) **है।** यह जीती-जागती 'आत्मिक जीवन-रौं' (Divine life current) 'अनहद धुन' के रूप में समस्त सृष्टि में व्याप्त है। ईश्वरीय 'हुकुम' के अधीन, यही 'आत्मिक जीवन-रौं' समस्त सृष्टि के प्राकृतिक नियमों में, प्रवृत्त तथा रवि रही परिपूर्ण है।

गुरबाणी अनुसार इसी —

'परम-तत्'
'जीवन-रौं'
'अनहद-धुन'
'रुनझुनकार'
'अकल कला'
'बाणी'
'नाम'
'हुकुम'

के गुप्त सूक्ष्म परम-तत्वों के **प्रवेश तथा प्रवृत्ति को ही 'शबद' कहा गया है।**

The wordless WORD is the Divine Current —

permeating
running through
vibrating
projecting
guiding
governing
animating

every particles of the cosmos.

यहाँ एक बात और समझने वाली है कि वैज्ञानिकों ने तो दृश्यमान पदार्थ (matter) को तोड़-तोड़कर, इसके **'सूक्ष्म-तत्' रूप 'अचेतन शक्ति को खोजा है।**

परन्तु **भक्तों ने सिमरन द्वारा, प्रेम-भक्ति से, अर्न्तमुख होकर, अदृष्य विखिण्डित वृत्तियों को एकाग्र करके,** अपने अन्दर ही 'जागृत-ज्योति' तथा **'परम-तत्' रूपी 'शबद' या 'अनहद धुन' को अनुभव किया है ।**

जब यह मन '**अनहद-धुन**' सुनता है, तब **विस्मादमयी-आश्चर्यजनक रस पान करता है**, तथा फिर 'वाहु-वाहु' के **आत्मिक हुलास में** इस का किसी **बोली द्वारा प्रकटाव होता है,** तब इसे '**बाणी**' कहा जाता है ।

जब गुरू साहिब के मुखारविन्द से ईश्वरीय **अनहद-धुन का प्रकटाव हुआ-** तब उसे **'गुरबाणी'** कहा गया है । इस प्रकार चारो युगों के संत या भक्त, अपने हृदय की गहराईयों में से जब कोई **'वचन'** उच्चारण करते हैं, तब उसे **'संत-बाणी'** या **'भक्त बाणी'** कहते हैं । यह 'अनहद-धुन' या 'नाद', हमारे अन्दर गुप्त रूप में, आत्मिक गहराईयों में **एक-रस सदा गूँजता रहता है, जिसे 'शबद' कहा गया है ।**

सबदे उपजै अंम्रित बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ।। (पृ १२५)

सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ।।
जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ।।
(पृ ६०२)

यह बात भली-भाँति दृढ़ कर लेनी चाहिए कि इस **'शबद' का** —

आदि
तत्
स्वरूप
अनुभव

इसके 'स्रोत', निरंकार की भाँति —

रूप
रंग
आकार
चक्र
चिन्ह
मन
चित्त

बुद्धि
सुगन्धि
अक्षर
समय
आवाज
देश

से परे है ।

गुरबाणी में '**शबद**' के 'अनहद', 'सूक्ष्म' अनुभवी अस्तित्व को यूँ दर्शाया गया है ।

बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ।।
ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ।।

जहा बोल तह अछर आवा ।।
जह अबोल तह मनु न रहावा ।।
बोल अबोल मधि है सोई ।।
जस ओहु है तस लखै न कोई ।। (पृ ३४०)

रुण झुणो सबदु अनाहदु नित उठि गाईऐ संतन कै ।। (पृ ९२५)

सुंन सबदु अपरंपरि धारै ।
कहते मुकतु सबदि निसतारै ।। (पृ ९४४)

तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ ।।
अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ।। (पृ ११५४)

वाहिगुरू गुरु सबदु लै पिरम पिआला चुपि चबोला । (वा. भा. गु. ४/१७)

अनहद सबदु अवेसि अघडु घड़ाइआ । (वा. भा. गु. १४/३)

उपरोक्त विचार से यह सिद्ध हुआ कि —

1. **'शबद'** दृश्यमान मायिकी दुनिया में 'शाब्दिक रूप' तथा 'बोली' में प्रकट है ।

अखरी नामु अखरी सालाह ।।
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ।। (पृ ४)

2. 'शबद' **मात्र शब्दिक रूप नहीं ।**

3. अदृष्य आत्मिक मंडल में, 'शबद', **'सूक्ष्म' तथा अगोचर है, जो हमारे मन, बुद्धि की 'पकड़' से परे है ।**

4. यह ईश्वरीय **'शबद' केवल अनुभव द्वारा** —

समझा
बूझा
सीझा
चीन्हा
पहचाना
विचार किया
पालन किया
अनुभव किया
मन में बसाया
मनन किया

जा सकता है ।

5. **यह सूक्ष्म 'शबद' ही 'ईश्वरीय अस्तित्व' का** —

प्रकटाव है
प्रतीक है
प्रकाश है
प्रमाण है
चिन्ह है ।

6. **'शबद' तथा 'नाम', आत्मिक प्रकाश के दो 'पक्ष' हैं** —

'शबद' — ईश्वरीय 'अस्तित्व' का **प्रकाश तथा प्रतीक है ।** (Divine essence)

'नाम' — इस प्रकाश की प्रवृत्ति है । (dynamic activation)

'शबद' तथा **'नाम' दोनों ही, एक ही 'आत्मिक प्रकाश' के प्रतीक तथा प्रकटाव हैं ।**

सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ।। (पृ ६४४)

अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ।। (पृ ९२१)

गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै ।। (पृ १०५७)

गुरबाणी वरती जग अंतरि इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा ।। (पृ. १०६६)

पहले वर्णन आ चुका है कि **'तत् शबद'** अपने **'स्रोत' निरंकार की भाँति अति सूक्ष्म तथा अरूप** है । **'सुरति'** भी 'तत् शबद' की भाँति **सूक्ष्म तथा अरूप है ।**

'सूक्ष्म वस्तु — सूक्ष्म साधन द्वारा ही **पकडी या बूझी** जा सकती है ।

इसलिए **सूक्ष्म सुरति** ही 'तत् शबद' को **'अनुभव'** कर सकती है, क्योकि **सूक्ष्म सुरति में ही सामर्थ्य है कि यह** —

ईश्वरीय भय
ईश्वरीय विस्माद
दिव्य प्रेम
'अनहद नाद'
'नाम-धुन'

का **अनुभव द्वारा आनन्द लेते हुए, त्रिगुण माया के** —

देश
काल
स्थानप
विकार

की सीमाँए पार कर, 'तत्-शबद' में विलीन हो सकती है । यह 'सूक्ष्म सुरति' की देन, 84 लाख योनियों में, **केवल मनुष्य को ही प्रदान हुई है** —

हथ पैर दे दाति करि सबद सुरति सुभ दिसटि दुआरे । (वा. भा. गु. १८/३)

यहाँ यह बात समझने योग्य है कि यह 'तत्-शबद' माया में गलतान हुए हमारे **कठोर मन, चित, बुद्धि की पकड़ से दूर है ।**

इस विचार से स्पष्ट है कि —

तत् शबद — गुरू है, तथा
सुरति — चेला है ।

जिस प्रकार 'शबद', 'संसार' तथा 'निरंकार' के बीच एक पुल (bridge) है, इसी प्रकार **'सुरति' भी सूक्ष्म तत्-शबद' तथा 'स्थूल-शाब्दिक शबद के बीच अनुवादक या उल्थाकार** (translator) **है।**

दूसरे शब्दों में **'सुरति'** अन्तर-आत्मा में सूक्ष्म **दिव्य अनुभवों का, शब्दों में वर्णन कर सकती है** तथा शब्दों में दर्शाये हुए सूक्ष्म दैवीय गुणों को अन्तर-आत्मा में अनुभव करके, **'आत्मिक रस' पान कर सकती है।**

'सुरति' ही निरंकार तथा संसार में, 'तत् शबद' रूपी 'पुल' (bridge) को **अनुभव करके,** जीव को मायिकी भव सागर **से पार करा सकती है।** यह 'सूक्ष्म खेल' निम्नलिखित प्रमाणों से और भी स्पष्ट हो जाती है —

दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ।।
रुहला टुंडा अंचुला किउ गलि लगै धाइ ।।
भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ।।
नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ।। (पृ. १३९)

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ।।
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ।। (पृ. ९३८)

मनु करि बैलु सुरति करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ।। (पृ. ११२३)

सबदु सुरति असगाह अघड़ घड़ाइआ । (वा. भा. गु ३/४)

परन्तु इस अर्न्तमुख **'सूक्ष्म-खेल'** को केवल साध-संगत तथा गुर प्रसादि द्वारा ही बूझा या जाना जा सकता है। इस नुक्ते को भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में यूँ स्पष्ट दर्शाया है —

सबद सुरति लिव साध संगि गुर किरपा ते अंदरि आणै । (वा. भा. गु. ६/१९)

साध संगति गुर सबद सुरती । (वा. भा. गु. ७/६)

साध संगति गुर सबदु कमाई । (वा. भा. गु. १६/१)

साध संगति गुरु सबदु वसंदा । (वा. भा. गु. १६/३)

साध संगति गुर सबदु पिआरा । (वा. भा. गु. २९/३०)

साध संगति गुर सबदु विलोवै । (वा. भा. गु. २८/१)

सबद सुरति लिव सावधान गुरमुखि पंथ चलै पग धारे ।

(वा. भा. गु ३७/२७)

यहाँ एक बात अति आवश्यक है कि **'शबद-सुरति' का मिलाप होने से,** जीव की 'ज़मीर' या 'आत्मा की आवाज' साथ-ही-साथ बलवान तथा ज्ञानवान होती जाती है । यह आवाज जिज्ञासु के अन्दर निरन्तर, अनेक दिव्य प्रेरणाँए तथा भावनाँए पैदा करती तथा गलत दिशा में जाने से **तत्क्षण रोकती है** । 'ज़मीर' की आन्तरिक दिव्य आवाज, जिज्ञासु की —

सुरति
मति
मन
बुद्धि
आचरण

को **'घड़ने' के लिए अत्यन्त सहायक होती है** ।

तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ।।
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ।। (पृ ८)

इस विचार से स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि **'ज़मीर'** या **आत्मा की आवाज़ का, 'शबद-सुरति' के मेल से गहरा संबंध है** तथा एक दूसरे में ओत-प्रोत है । यह 'ज़मीर' की आवाज भी **सुरति द्वारा अन्तर-आत्मा में ही सुनायी दे सकती है** ।

शबद-सुरति के मेल से, ईश्वरीय मंडल के समस्त आत्मिक गुण, जीव के मन, तन, चित्त, बुद्धि में प्रवृत्त हो जाते हैं तथा जीव **'भाग्यवान' तथा 'गुरमुख' बन जाता है** ।

(क्रमशः.....)